www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आध्यात्मिक काम विज्ञान की जानकारी जन-जन तक पहुँचे

- श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आध्यात्मिक कामविज्ञान की जानकारी जन-जन तक पहुँचे

सृष्टि का संचरण किस क्रिया से होता है, इस सम्बन्ध में पदार्थ विज्ञान अणु को प्रथम इकाई मानता है। उनका कहना है कि अणु के अन्तर्गत नाभिक तथा दूसरे उपअणु अपना क्रिया-कलाप जिस निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार संचरित करते हैं, उसी में विविध हलचलें उत्पन्न होती हैं और वस्तुओं के उद्भव से लेकर शक्ति उप शक्तियों विधा की विभिन्न क्रम विक्रमों के आधार पर चल पड़ती है। यह तीस वर्ष पुरानी मान्यता है। विज्ञान की आधुनिकतम शोधों ने बताया है कि अणु आरम्भनहीं परिणति है। सृष्टि का मूल एक चेतना है, जिसे पदार्थ और विचार की द्विधा से सुसम्पन्न कहा जा सकता है। इस चेतना को वे प्रकृति कहते हैं। प्रकृति के स्फुलिंग ही परमाणु माने जाते हैं और कहा जाता है कि उन्हीं की गतिविधियों पर सृष्टि का उद्भव, विकास और विनाश अवलम्बित है।

अध्यात्म विज्ञान इसकी बहुत अधिक गहराई तक जाता है और वह सृष्टि का आरम्भ प्रकृति और पुरुष के सम्मिश्रण से मानता है। वैज्ञानिक शब्दों में प्रकृति को रयि और पुरुष को प्राण भी कहा जाता है। इसी को शक्ति और शिव कहते हैं। वेदों में इसे सोम और अग्नि कहा गया है। और भी अधिक स्पष्ट समझना हो तो ऋण (निगेटिव) और धन (पाजेटिव) विद्युत धारायें कह सकते हैं। विद्युत विज्ञान के ज्ञाता जानते हैं कि प्रवाह (करेन्ट) के अन्तराल में उपरोक्त दोनों धाराओं का मिलन विछुड़न होता रहता है। यह मिलन विछुड़न की क्रिया न हो तो बिजली का उद्भव ही सम्भव न हो सकेगा।

प्रकृति और पुरुषके बारेमें सांख्यकारकी उक्तिहै कि वह निरन्तर मिलन-विछुड़नके संघर्ष अपकर्ष की प्रक्रिया संचरित करते हैं। फलस्वरूप परा और अपरा प्रकृति के नाम से पुकारा जाने वाला वह सृष्टि वैभव आरम्भ हो जाता है, जिसका प्रथम परिचय हम अणु प्रक्रिया द्वारा प्राप्त करते हैं। वलोक घड़ियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में पेण्डुलम लगा रहता है और गतिचक्र के नियमानुसार एक बार हिला देने पर वह स्वयमेव हिलते रहने की क्रिया करने लगता है और घड़ी की मशीन चलने लगती है। प्रकृति और पुरुष निरन्तर उसी प्रकार का मिलन विछुड़न क्रम संचरित करते हैं और सृष्टि का क्रिया-कलाप दीवार घड़ी की पेण्डुलम प्रक्रिया की तरह चल पड़ता है।

इस सूक्ष्म तत्व ज्ञान—एक अन्तर विज्ञान को और भी अधिक स्पष्ट समझना हो तो उसे नर-नारी का रूपक दिया जा सकता है। ब्रह्म को नर और प्रकृति को नारी का प्रतीक प्रतिनिधि माना जा सकता है। सृष्टि का उद्भव विकास और विगठन करने वाली शक्ति त्रिवेणी को ब्रह्मा विष्णु, महेश के नाम से पुकारते हैं। यों तत्व एक ही है, पर उसके क्रिया-कलाप की भिन्नता को अधिक स्पष्टता के साथ समझने—समझाने के लिए तीन देवताओं का नाम दिया गया है। वे तीनों ही सपत्नीक हैं। ब्रह्मा की पत्नी का नाम सावित्री, विष्णु की लक्ष्मी और शिवकी उमा प्रख्यात है। इस अलङ्कार के पीछे इसी तथ्य का प्रतिपादन है कि सृष्टि का उद्भव अकेले ब्रह्म से नहीं वरन् प्रकृति के संयोग से होता है। नर और नारी दोनों मिलकर ही एक व्यवस्थित शक्ति का रूप धारण करते हैं, जब तक यह मिलन न हो गति एवं चेतना उत्पन्न ही न होगी और सब कुछ शून्य निष्प्राण की तरह पड़ा रहेगा। नृतत्व विज्ञान की दृष्टि से पति-पत्नी का मिलन सृष्टि का स्थूल कारण है। सयोग या संभोग से प्रजा उत्पन्न होती है। प्रजनन प्रक्रिया में मिलन विछुड़न क्रम की एक रगड़ संघर्ष जैसी हलचल चलती है। इससे सृष्टि के अति सूक्ष्म क्रिया-कलाप का अनुमान लगाया जा सकता है। शरीर का जीवन इसी क्रिया-कलाप पर जीवित है। मांस पेशियाँ सिकुड़ती फैलती हैं। और जीवन शुरू हो जाता है। सांस का संचरण, दिल की धड़कन, नाड़ियों का रक्त संचार, कोशिकाओं का क्रिया-कलाप इस मिलन विछुड़न की—आकुंचन प्रकुंचन की क्रिया पर ही निर्भर है। जिस क्षण यह क्रम टूटा उसी क्षण मृत्यु की विभीषिका सामने आ खड़ी होती है। यह तथ्य मात्र देह के जीवन का नहीं—सम्पूर्ण सृष्टि का है। समुद्र में उठने वाले ज्वार-भाटे की तरह यहाँ सब कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उस संयोग पर हो रहा है, जिसे अध्यात्म की भाषा में प्रकृति और पुरुष अथवा रयि और प्राण कहते हैं।

मानव जीवन इसी सर्वव्यापी क्रिया-कलाप पर निर्भर है। नर और नारी मिलकर स्थूल जीवन को पुरुष और प्रकृति के संयोग से चलने वाले सूक्ष्म जीवन क्रम की तरह विनिर्मित करते हैं। इसलिये सामाजिक जीवन में नर और नारी का मिलन एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। अपवाद की बात अलग है। विवशता और अति उच्चस्तरीय आदर्शवादिता नर-नारी के मिलन को वर्जित भी रख सकती है, पर वह मात्र अपवाद है। उनमें स्वाभाविक नहीं और न सरल विकास क्रम की क्रम-व्यवस्था का ही समावेश है। स्वाभाविक जीवन नर-नारी के सुयोग संयोग से विकसित होता है, इस तथ्य को स्वीकार करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

यह संयोग मात्र प्रजनन के लिए नहीं है और न इन्द्रिय तृप्ति के लिए। वंश वृद्धि और आह्लाद की आवश्यकता इन क्रियाओं को अपनाने के लिए भी प्रेरणा कर सकती है, पर नर-नारी के मिलन के आधार पर बनने वाला संयोग मूलतः दोनों की प्रसुप्त चेतनाओं को जगाने के लिए, जन्म से लेकर मरण पर्यन्त यह आवश्यकता समान रूप से बनी रहती है। बचपन में माता का स्तन पीना, गोदी में खेलना लाड़-दुलार एक आवश्यकता है। मातृ विहीन लड़के और पितृ विहीन लड़कियाँ मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत हद तक अविकसित रह जाते हैं। बहिन-भाइयों का साथ खेलना परिवार की शोभा है। जिन घरों में केवल लड़के ही लड़के हैं या लड़कियाँ ही लड़कियाँ हैं, उनमें सर्वतोमुखी प्रतिभा का विकास बहुत कुछ रुका रहता है और मानसिक अपूर्णता को वहाँ सहज ही देखा जा सकता है। यौवन के आँगन में प्रवेश करते ही दाम्पत्य-जीवन की व्यवस्था जुटानी पड़ती है। ढलती आयु में यह जरूरत पुत्र और पुत्रियों को गोदी में खिलाते हुए पूरी होती है। इस प्रकारान्तर में नर-नारी आपस में प्रायः गुथे ही रहते हैं और अपनी-अपनी विशेषताओं के कारण एक दूसरे की प्रतिभा की—प्रसुप्त शक्तियों को जगाने की महत्वपूर्ण भूमिका स्थापित करते रहते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मनोविज्ञान शास्त्री डा० फ्रायड ने मानव जीवन के विकास की सबसे महती आवश्यकता "काम" मानी है। जिसे नह नर और नारी के मिलन से विकसित होने वाली मानता है। चूँकि अपने देश में 'काम' शब्द प्रजनन क्रिया एवं संयोग के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है, इसलिये वह अश्लील जैसा बन गया है और उसे हेय दृष्टि से देखा जाता है। इसलिये फ्रायड की उपरोक्त मान्यता अपने गले नहीं उतरती और न रुचती है। पर यदिउसे वैज्ञानिक परिभाषा के आधार पर सोचें और शब्दों के प्रचलित अर्थों को कुछ समय के लिये उठाकर एक ओर रख दे तो इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि सृष्टि के मूल कारण प्रकृति पुरुष के मिलन से लेकर दाम्पत्य जीवन बसाने तक चली आ रही काम प्रक्रिया विश्व की एक ऐसी आवश्यकता है जिसे अस्वीकार करने में केवल आत्म-वंचना ही हो सकती है।

दुरुपयोग हर वस्तु का निषेध है। अति को सर्वत्र वर्जित किया गया है। अविवेकी मनुष्य ने हर इन्द्रिय का दुरुपयोग करने में कोई कसर नहीं रखी है। संयम और ब्रह्मचर्य के महत्व को समझते हुए मर्यादाओं के अन्तर्गत रहते हुए तत्सम्बन्धित कामोल्लास का लाभ लिया जाय तो उससे हानि नहीं, लाभ ही होगा। हानि तो दुरुपयोग से है। सो दुरुपयोग अमृत का करके भी हानि उठाई जा सकती है और सदुपयोग विष का भी किया जाय तो उससे भी आश्चर्यजनक लाभ उठाया जा सकता है। हेय काम प्रवृत्ति नहीं—भर्त्सना उसके दुरुपयोग की की जानी चाहिए।

नर-नारी का मिलना जितना ही प्रतिबन्धित किया जायगा उतनी ही विकृतियाँ उत्पन्न होंगी। सच तो यह है कि अनावश्यक प्रतिबन्धों ने ही हेय काम प्रवृत्ति को भड़काया है। बच्चा माँ का दूध पीता है, उसे स्तन स्पर्श से कुछ भी अश्लीलता प्रतीत नहीं होती है और न लज्जा जैसी कोई बुराई दीखती है। आदिवासी क्षेत्रों में, पिछड़े कबीलों में, स्त्रियाँ प्रायः छाती नहीं ढकतीं। वहाँ किसी को इसमें अश्लीलता और काम विकार भड़काने वाली कोई बात ही प्रतीत नहीं होती। यह मानसिक कुत्सायें और मूढ़ मान्यतायें ही हैं, जिन्होंने नारी के स्तन जैसे परमपवित्र और अभिवन्दनीय अङ्ग को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विकारों का प्रतीक बनाकर रख दिया। यह विचार विकृति का दोष ही है कि अति स्वाभाविक और अतिसामान्य नारी की—एक कुत्सा गढ़ कर खड़ी कर दी है। काम का विकृत स्वरूप जिसने मनुष्य की एक प्रकृति प्रदत्त दिव्य सामर्थ्य को कुत्सित बनाकर रख दिया वस्तुतः हमारी बौद्धिक भ्रष्टता ही है। पशु-पक्षी नग्न रहते हैं। उनकी जननेन्द्रिय बिना ढकी रहती है। सभी साथ-साथ खाते, सोते है, पर बिना अवसर की माँग हुये दोनों पक्षियों में से कोई किसी की ओर ध्यान तक नहीं देता, आकर्षित होना तो दूर। मनुष्य कृत गर्हित काम-शास्त्र को यदि जला दिया जाय और प्रकृति की स्वाभाविक प्रेरणा और जीवन विकाश के पुण्य प्रयोजन के लिए उस संजीवनी शक्ति का सदुपयोग किया जाय तो काम क्रीड़ा गर्हित न रह कर जीवनोत्कर्ष की एक महती आवश्यकता पूर्ण कर सकने में समर्थ बनाई जा सकती है।

आध्यात्मिक काम शास्त्र की जानकारी हमें सर्व साधारण तक पहुँचानी ही चाहिए। भले ही उस प्रशिक्षण को अवांछनीय या अश्लील कहा जाय। सृष्टि के इतने महत्वपूर्ण विषय जिसकी जानकारी प्रकृति जीव-जन्तुओं तक को करा देती है उसे गोपनीय नहीं रखा जाना चाहिए। खास तौर से तब जबकि इस महत्वपूर्ण विज्ञान का स्वरूप लगभग पूरी तरह से विकृत और उलटा हो गया हो। जो मान्यतायें चल रही हैं वे ही चलने दी जायें। सुलझे हुए समाधान और सुरुचिपूर्ण प्राविधान यदि प्रस्तुत न किये गये तो विकृतियाँ ही बढ़ती, पनपती चली जायेंगी और उससे मानव जाति एक महती शक्ति का दुरूपयोग करके अपना सर्वनाश ही करती रहेगी।

आध्यात्मिक काम विज्ञान नर-नारी के निर्मल सामीप्य का समर्थन करता है। दाम्पत्य जीवन में उसे इन्द्रिय तृप्ति और काम-क्रीड़ा द्वारा उत्पन्न होने वाले हर्षोल्लास की परिधि तक बढ़ाया जासकता है। इसके अतिरिक्त वह सौम्य सामीप्य अप्रतिबन्धित रहना चाहिए। जिस प्रकार दो नर या नारी चाहे वे किसी वय के हों निर्बाध रूप से हँस-बोल सकते हैं और स्नेह सामीप्य बढ़ा सकते हैं और उससे कुछ भी अनुचित आशङ्का नहीं की जाती, इस प्रकार नर-नारी का परस्पर व्यवहार भी निर्मल और निष्कलङ्क रखा जा सकना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अति सरल है। इस सौम्य सरलता को प्रतिबन्धित नहीं किया जाना चाहिए। प्रतिबन्ध परक प्रयोग पिछले बहुत दिनों से चले आ रहे हैं और उनके निष्कर्षों ने उस मान्यता की निरर्थकता ही सिद्ध की है। पर्दे की प्रथा चलाकर हमने क्या पाया ? केवल इतना भर हुआ कि नवागन्तुक बधुयें अपनी सुसराल का जो अविच्छिन्न स्नेह पा सकती थी, अनुभवी गुरुजनों का परामर्श प्राप्त कर सकती थीं, अपनी कठिनाइयों की चर्चा करके समाधान पा सकती थीं, उससे वंचित रह गईं। उन्हें सुसराल का वातावरण पितृ ग्रह से उतना भिन्न और विपरीत लगा जितना स्वच्छन्द विचरण करने वाले पक्षी की आँखें बन्द करके, चारों ओर से पर्दा लगाकर रखे गये पिंजड़े में बन्द किये जाने की स्थिति में हो सकता है। कई भावुक लड़कियाँ तो इस जमीन आसमान जैसे परिवर्तन से बुरी तरह घबरा जाती हैं और उन्हें हिस्टीरिया सरीखे—भय, भूत-प्रेत, घबराहट जैसी अनेकों मानसिक बीमारियाँ उठ खड़ी होती हैं। ऐसी स्थिति में हीनता की भावना बढ़ना नितान्त स्वाभाविक है।

यह स्वाभाविक प्रक्रिया एक कदम भी जीवित न रह सकी। पर्देका उद्देश्य रत्तीभर भी सफल न हुआ। उसका उद्देश्य नर और नारी के बीच पारस्परिक आकर्षण को रोकना था। वह कहाँ पूरा हुआ। नव वधू केवल सुसराल में सास-ससुर, जेठ आदि गुरुजनों से पर्दा करती है। जो वस्तुतः उसे बेटी जैसी ही समझ सकते हैं। जिनसे खतरा है उनके लिये तो पर्दा फिर भी खुला रह सकता है। यदि व्यभिचार की रोक-थाम की समस्या है तो उसकी सबसे अधिक गुञ्जायश पितृग्रह के स्वच्छन्द वातावरण में रहती है। सुसराल में भी बाहर के लोगों से हाट बाजार में—मेले-ठेले में किसी से भी मुँह खोलकर बातें की जा सकती हैं।

अध्यात्म तत्व ज्ञान की मान्यतायें नर-नारी के बीच की उन अवांछनीय दीवारों को तोड़ना चाहती हैं जो मनुष्य को मनुष्य से पृथक करती है और एक दूसरे का सहयोग करने में अस्वाभाविक अप्राकृतिक प्रतिबन्ध उत्पन्न करती हैं। यौन विकृतियों और व्यभिचार के खतरों को रोकने के दूसरे तरीके हैं। एक दूसरे से सर्वथा प्रथक रखने वाली प्रक्रिया इस प्रयोजन को पूरा नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करती। आधी जनसंख्या को इन प्रतिबन्धों के नाम पर अपंग बनाकर हम अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मार रहे हैं। सारी समस्या का एक मात्र कारण वह बौद्धिक भ्रष्टाचार है, जिसने नारी को कामिनी और रमणी का अतिरंजित चित्रण करके उसे एक भयावह चुड़ैल के रूप में प्रस्तुत कर दिया।

नर और नारी के बीच पाये जाने वाले प्राण और रयि—अग्नि और सोम स्वाहा और स्वधा तत्वों का महत्व सामान्य नहीं असामान्य है। सृजन और उद्भव की—उत्कर्ष और आह्लाद की असीम सम्भावनायें उसमें भरी पड़ी हैं, प्रजाउत्पादन तो उस मिलन का बहुत ही सूक्ष्म सा स्थूल और अति तुच्छ परिणाम है। इस सृष्टि के मूल कारण और चेतना के आदि स्रोत इन द्विधा संस्करण और संचरण का ठीक तरह मूल्यांकन किया जाना चाहिए और इस तथ्य पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि इनका सदुपयोग किस प्रकार विश्व कल्याण की सर्वतोमुखी प्रगति में सहायक हो सकता है और उनका दुरुपयोग मानव जाति के शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य को किस प्रकार क्षीण विकृत करके विनाश के गर्त में धकेलने के लिए दुर्दान्त दैत्य की तरह सर्वग्रासी सङ्कट उत्पन्न कर सकता है।

क्र० ८६/प्र० युग निर्माण योजना; मु० युग निर्माण प्रेस, मथुरा। मूल्य ५० पैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org